ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

आदिवासी : कथा आलोचना

सम्पादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 17 संयुक्तांक, अप्रैल-सितम्बर 2021

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू., अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ (बी.एच.यू.)
डॉ. शगुफ्ता नियाज़ (अलीगढ़)
डॉ. इकरार अहमद ([illegible])

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
निकट पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य–250/–

सहयोग राशि :
एक प्रति : 80 रु., द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 700 रु.

आदिवासी जीवन का यथार्थ और उसकी भावपूर्ण अभिव्यक्ति/116
राम विनय शर्मा
आदिवासी जनजीवन से साक्षात्कार कराती कहानियाँ (संदर्भ- आदिवासी कथा जगत)/130
सुशील कुमार
हिंदी की प्रारंभिक आदिवासी कहानियाँ/138
डॉ. भावना मासीवाल
आदिवासी विमर्श का प्रस्थान बिंदु : हिंदी की आरम्भिक आदिवासी कहानियाँ/151
डॉ. नितिन सेठी
मोहभंग : आदिवासी जीवन का श्वेतपत्र/156
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
शोषण व्यवस्था में पिसता आदिवासी समाज और उससे उपजा 'मोहभंग'/168
हेमंत कुमार
वेदनाओं की अनंत कथा/179
डॉ. शिवचंद प्रसाद
जनजातीय समाज के खुरदुरे यथार्थ की कहानियाँ : गोड़पोछना/185
डॉ. शत्रुघ्न सिंह
भगोरिया की बाट में आदिवासी जीवन/193
डॉ. बृजबाला सिंह
भगोरिया की बाट : आदिम संस्कृति के विविध आयाम/203
फरीदा खातून
अनसुनी आवाज़ों का पुनर्सृजन : बाँस का किला/209
डॉ. विशाला शर्मा
जाने ये राहें अब ले जायेंगी कहाँ.../216
डॉ. अल्पना सिंह
राकेश कुमार सिंह की कहानियों में आदिवासी जीवन/222
डॉ. सियाराम
सांस्कृतिक इतिहास का आख्यान : रात बाकी और अन्य कहानियाँ/232
डॉ. अमित कुमार भारती

भय से पिता एवं पति का त्याग
की ठोकर खाकर अट्ठारह वर्ष
रण वह अचेत हो जाता है। जेब
हुँचा देती है। गाँव भर में खबर
सीमा पर अधजली लाश मिलती
ादमियों से उसे जलवाया जाता
। यह क्रूरता नहीं, हत्या नहीं,
यह कहानी आदिवासी और
खलेपन को पूरी तरह बेनकाब

होती हैं, अपने प्रतिमान होते
निष्पक्ष मूल्यांकन हो सके।
उनके साहित्य की धारा भी
एवं विश्लेषण की सामर्थ्य
हैं। मानव-मन के अनेक
अतीत की आवाजाही है।
। वह सब कुछ है जिससे

ई दिल्ली, प्रथम संस्करण

, मिर्जापुर, प्रथम संस्करण

5-मार्च 2016), पृ. 40
बीर बहादुर पब्लिकेशन,

ाहदरा, दिल्ली, पृ. 8
77
37
86-90
112
122
ज, वाराणसी (उ.प्र.)

वाङ्मय

भगोरिया की बाट : आदिम संस्कृति के विविध आयाम

फरीदा खातून

हमारा देश विविध सांस्कृतिक विविधताओं का देश है। आदिम काल से ही यहाँ विभिन्न जातियाँ एवं उपजातियाँ निवास करती हैं। ऐसी जातियों में आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति में ये अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। विगत् कई शताब्दियों से यह समाज तीव्र संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। वर्तमान में कोई भी आदिवासी समाज बाहरी प्रभाव से अछूता नहीं है। इस समाज पर भी शहरी एवं सभ्य समाज का प्रभाव पड़ा है। ये प्रभाव कई रूपों में सकारात्मक तो कई रूपों में नकारात्मक भी हैं। वैसे भी एक संस्कृति दूसरी संस्कृति को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रभावित करती है।

'भगोरिया की बाट' शिवकुमार पांडेय द्वारा लिखित भील आदिवासियों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर केंद्रित है। उन्होंने अपनी इस पुस्तक में मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र प्रदेशों में निवासरत भील एवं भिलाला जनजातियों के सांस्कृतिक, सामाजिक जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की हैं। एक ओर लेखक ने इन कहानियों में भील समाज के समुदायगत परिवेश पर प्रकाश डाला है तो दूसरी ओर भील संस्कृति के मूल स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभाव को भी लक्षित किया है। इसकी भूमिका में वे लिखते हैं, "जहाँ तक संग्रह की कहानियों का संबंध है, भील संस्कृति के विभिन्न परिवर्तित आयामों को परिवर्तित करती कहानियाँ भील संस्कृति के मूल स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाते हुए संस्कृति के उस पक्ष को भी उजागर करती है, जो समुदायगत विशेषताओं के कारण मूल स्वरूप में आज भी विद्यमान है।"[1] संग्रह की प्रायः सभी कहानियों में भील जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की झलक दिखाई देती है।

'भगोरिया की बाट' कहानी में हम भील आदिवासी के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से रू-ब-रू होते हैं। भगोरिया के हाट में युवक-युवती ढोल माँदर के बीच उन्मुक्त रूप से मस्ती में झूम उठते हैं और इसी हाट में प्रेमी जोड़े एक-दूसरे के मुँह पर गुलाल मलकर प्रेम-विवाह का रास्ता अपनाते हैं। इसी हाट में पीढ़ियों की पुरानी दुश्मनी का भी प्रतिशोध लिया जाता है- "इसी में जीवन के आनंददायी क्षण भी हैं। लड़के-लड़कियों

आपराधिक प्रवृत्ति को भी बढ़ावा मिलता है। आधुनिक संचार क्रांति एवं शिक्षा के प्रभाव ने भील आदिवासी संस्कृति को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। आदिम संस्कृति पर बाहरी प्रभावों को लक्षित किया जा सकता है।

संदर्भ-

1. शिवकुमार पांडेय, भगोरिया की बाट, मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली, पृ. 8
2. वही, पृ. 27
3. वही, पृ. 19
4. वही, पृ. 50
5. वही, पृ. 52
6. वही
7. वही, पृ. 20
8. वही, पृ. 84
9. वही, पृ. 131
10. वही, पृ. 94
11. वही, पृ. 104
12. वही, पृ. 16
13. वही, पृ. 41

असिस्टेंट प्रोफेसर, पंचकोट महाविद्यालय, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल